

# लक्ज़री आइटमों पर ऊर्जा कर

के. जयलक्ष्मी

**आ**प अपने पसंदीदा अभिनेता के चेहरे के रोम छिद्रों में झांक सकते हैं। आप म्यूज़िक सिस्टम की खनकती आवाज़ के साथ अपने दिल की धड़कनों की लय मिला सकते हैं। आज का डिजिटल युग वीडियो और संगीत के जुनूनी लोगों के लिए उच्च गुणवत्ता और हाई डेफिनेशन वाली आवाज़ और तस्वीरें लेकर आया है। फिर वॉशिंग मशीन, डिशवॉशर, ड्रॉयर ... क्या-क्या नहीं है! यह प्रौद्योगिकी विकास का ही तो परिचायक है।



लेकिन जब हम उर्जा के क्षेत्र में विरोधाभास पर विचार करते हैं तो हमारे सामने एक अलग ही तस्वीर उभरती है। एक तरफ बिजली की आपूर्ति में लगातार गिरावट आती जा रही है, तो वहीं दूसरी ओर, बाज़ार में ऊर्जा पर निर्भर उत्पादों की बाढ़ आ गई है। आप कोई भी पांच नए गेजेट्स उठा लीजिए, वे या तो बैटरी से चलने वाले होंगे या सीधे बिजली से। भले ही एक उपकरण पर ऊर्जा की खपत बहुत कम होती हो, लेकिन यदि सभी को मिलाकर देखें तो स्थिति भयावह नज़र आएगी। उदाहरण के लिए मोबाइल फोन को लिया जा सकता है जो आज हर कहीं नज़र आता है। एशिया प्रशांत क्षेत्र (जापान को छोड़कर) में मोबाइल फोन की बिक्री में 10 फीसदी का इज़ाफा हुआ है। वर्ष 2008 में ही यहां 40 करोड़ हैंडसेट की बिक्री हुई थी। इसमें मुख्य योगदान चीन और भारत का रहा है। भारत में मोबाइल उपभोक्ताओं की संख्या 20 करोड़ को पार कर गई है।

भारत में मोबाइल फोन की पैठ दर 2006-07 में 14.71 थी और यह 1999 की राष्ट्रीय दूरसंचार नीति में

निर्धारित किए गए लक्ष्य से कहीं ज़्यादा है। इस उद्योग के भविष्यवक्ताओं की मानें तो अगले दस सालों में भारत में मोबाइल पैठ दर 65 फीसदी तक पहुंच जाएगी।

एक मोबाइल को एक घंटे तक चार्ज करने पर तीन वॉट बिजली की खपत होती है। यदि उसे चार्जिंग पर ही छोड़ दिया जाए तो अतिरिक्त आधे वॉट की खपत और होगी। यह मानते हुए कि मोबाइल को चार्जिंग के बाद निकाल लिया जाता है, 20 करोड़ मोबाइल फोन सेट्स

को चार्ज करने पर 600 मेगावॉट बिजली खर्च होगी। आगामी वर्षों में इसमें तीन गुना बढ़ोतरी की संभावना है।

अगर टेलीविज़न की बात करें तो स्थिति और भी गंभीर दिखाई देती है। एक औसतन 51 इंच के कैथोड-रे ट्यूब (सीआरटी) सेट में बिजली की खपत 150 वॉट होती है। प्लाज़्मा टीवी में यह खपत और भी ज़्यादा होगी। अगर केवल सीआरटी सेट्स की बात करें तो भारत में कितने ही ऐसे टीवी होंगे। कई मध्यमवर्गीय घरों में तो एक नहीं, बल्कि दो-दो टीवी सेट होते हैं। इससे अनुमान लगा लीजिए कि बिजली की खपत कितनी होती होगी!

यूके एनर्जी सेविंग टेस्ट के अनुसार प्लाज़्मा टेलीविज़न, जो अपने समकक्ष कैथोड-रे ट्यूब टीवी सेट से 50 फीसदी बड़े होते हैं, में बिजली की खपत करीब चार गुना अधिक होती है। कैथोड-रे टीवी सेट पर बिजली की खपत औसतन 3.4 वॉट प्रति स्क्रीन इंच होती है, जबकि प्लाज़्मा में यही खपत 9.4 वॉट प्रति स्क्रीन इंच होती है। एलसीडी टीवी सेट में सीआरटी सेट्स के बराबर ही या थोड़ी-सी ज़्यादा

खपत होती है। फिलिप्स के 42 इंची एलसीडी टीवी में 210 वॉट बिजली खर्च होती है, जबकि इसी आकार के प्लाज़्मा टीवी में खपत 350 से 400 वॉट की होती है। इससे बड़े टीवी सेट में 692 वॉट तक की खपत होती है और यह स्क्रीन के प्रकाश पर भी निर्भर करता है।

वॉल स्ट्रीट जर्नल के अनुसार कुछ घंटे चलने वाले 42 इंची प्लाज़्मा टीवी में बिजली की खपत बड़े-से-बड़े रेफ्रीजरेटर से ज़्यादा होती है। इसमें यदि सेट टॉप बॉक्स, गेम्स कंसोल, स्पीकर, डीवीडी, डिजिटल वीडियो रिकॉर्डर को भी जोड़ दिया जाए तो यह खपत बहुत तेज़ी से बढ़ती है।